ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-6* September-2021
Anthology : The Research

स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकासः जनपद फर्रूखाबाद का एक प्रतीकात्मक अध्ययन

Development Based on Local Resources: A Case Study of District Farrukhabad

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09//2021

अकालू प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
आर.पी.पी.जी. कालेज,
कमालगंज-फर्रूखाबाद उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

संसाधन और मनुष्य के बीच गहरा सम्बन्ध होता है। संसाधन के अन्तर्गत उन सभी पदार्थों को सम्मिलित किया जाता जो चाहे ठोस, तरल या गैसीय हों अथवा जीवीय या अजीवीय, जो मनुष्य के कार्यों में प्रयुक्त होते हों अथवा भविष्य में प्रयुक्त होने की सम्भावना रखते हों, संसाधन कहलाते हैं। ये संसाधन स्थानीय, प्रादेशिक तथा वैश्विक स्तर पर पाये जाते हैं। इनका उपयोग व सापेक्षिक विकास भी उसी के अनुरूप होता है। इन संसाधनों में वायु, जल, मिट्टी, खनिज पदार्थ-लोहा, कोयला, बाक्साइट, पेट्रोलियम आदि, वनस्पतियाँ, वन्य जीव तथा पशुधन प्रमुख हैं। इसमें कुछ सर्वसुलभ हैं, तो कुछ विशेष जगहों पर ही मिलते हैं। इसमें मिट्टी ही ऐसा संसाधन है, जो सर्वसुलभ है जिससे मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ सभी अन्य आवश्यकतायें पूर्ण होती रहती हैं। अध्ययन क्षेत्र फर्रूखाबाद में मिट्टी के साथ-साथ बालू व रेत तथा वनस्पतियाँ मुख्य संसाधन हैं। जिससे स्थानीय लोग कृषि कार्य के साथ ही उस पर आधारित उद्योग व उद्यम करते रहते हैं। जिससे उनकी आजीविका के साथ ही साथ सर्वांगीण विकास होता रहता है, और इसी का परिणाम है कि आज जनपद अपनी बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हो रहा है।

There is a close relationship between resource and man. Resources include all those substances, whether solid, liquid or gaseous or biotic or non-living, which are used in human activities or are likely to be used in future, are called resources. These resources are found locally, regionally and globally. Their use and relative development also corresponds to the same. These resources include air, water, soil, minerals – iron, coal, bauxite, petroleum etc., flora, wildlife and livestock. Some are accessible in this, some are found only in special places. Soil is the only resource in this, which is accessible to all, along with the basic needs of human beings, all other needs continue to be fulfilled. Along with soil, sand and sand and vegetation are the main resources in the study area Farrukhabad. Due to which the local people keep doing agricultural work as well as industries and enterprises based on it. Due to which all-round development continues along with their livelihood, and as a result of this, the district is moving towards its multifaceted development today.

मुख्य शब्दः संसाधन, ऑकलन, सरकण्डा, बहुफसलीय, चक्रण, उद्यम, भुजिया, गुईया इत्यादि।

Key Words: Resource, Estimation, Reed, Multi-Cropping, Rotation, Enterprise, Bhujia, Guiya etc.

प्रस्तावना

संसाधन, किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के चारों तरफ विद्यमान वे सभी पदार्थ चाहे वे प्राकृतिक हों या मानवीय, दृश्य अथवा अदृश्य; ठोस, तरल या गैसीय हों, जो मनुष्य के उपयोग में आते हों अथवा भविष्य में उपयोग में आने की सम्भावना रखते हों संसाधन कहलाते हैं। मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये संसाधनों का उपयोग विविध रूपों में करता रहता है। कोई पदार्थ जब तक मानव के सम्पर्क में नहीं आता है, तब तक वह संसाधन नहीं बल्कि के पदार्थ के रूप में रहता है। उस पदार्थ पर मनुष्य अपनी बुद्धि व विवके का उपयोग अपनी आवश्यकताओं के सापेक्ष करता है, तो वही पदार्थ एक संसाधन का रूप धारण कर लेता हैं। यह बुद्धि व विवके का प्रयोग प्रौद्यागिकी के रूप में भी किया जाता है। इस संदर्भ में सन् 1933 में जिम्मरमैन ने भी तर्क दिये थे कि "कोई भी पदार्थ अपने आप में संसाधन नहीं होता है, बल्कि मनुष्य अपनी बुद्धि व विवके का प्रयाग करे अपनी आवश्यताओं के अनुसार उसें परिवर्तन/संवर्धन करके संसाधन का रूप प्रदान करता है। इसलिए संसाधन होते नहीं बल्कि बनते हैं।" इस प्रकार, कोई पदार्थ तब तक संसाधन नहीं हैं, जब तक वे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते हैं। अन्य विद्वानों ने भी संसाधनों को इस प्रकार वर्णित किया है- स्मिथ एवं फिलिप्स के शब्दों में-"भौतिक रूप से संसाधन वातावरण की वे प्रक्रियायें

हैं जो मानव के उपयोग में आती हैं। जेम्स फिशर के शब्दों में- "संसाधन वह कोई भी वस्तु हैं जो मानवीय आवश्यकतों और इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। तथा जिम्मरमैन के अनुसार-"संसाधन पर्यावरण की वे विशेषतायें हैं जो मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम मानी जाती हैंए जैसे ही उन्हे मानव की आवश्यकताओं और क्षमताओं द्वारा उपयोगिता प्रदान की जाती हैं।"

इस प्रकार संसाधन के अन्तर्गत, पृथ्वीतल एवं उसके समीपस्थ के वे सभी पदार्थ या परिघटनायें चाहे वे ठोस, तरल या गैसीय हों, अथवा प्राकृतिक या अप्राकृतिक, अथवा जैविक या अजैविक हों, अथवा दृश्य या अदृश्य हों तथा सामान्यतया मानव उपयोग में आते हैं या भविष्य में उपयोग/उपभोग में आने की सम्भावना रखते हों, संसाधन कहलाये जा सकते हैं। ये प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों पकार के हो सकते हैं। मनुष्य प्राकृतिक तत्वों/तथ्यों को अपने अनुरूप उपयोग/उपभोग के लिए विविध तकनीकों/प्राविधिकीयों का विकास करता है। प्राकृतिक तंत्र/व्यवस्थायें किसी तकनीक का जन प्रिय प्रयोग उसे एक सभ्यता में

परिणित करता रहता है। जैसे जीने का तौर-तरीका या जीवन निर्वाहन की व्यवस्था। इस प्रकार यह मानवीय संसाधन की स्थिति प्राप्त करता है। इसलिये कहा जाता है कि "संसाधन होते नहीं, वे बनते हैं"। संसाधन ही राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के आधार का निर्माण करतें हैं। हम कह सकते हैं, कि संसाधनों के विविध रूपों यथा भूमि, जल, वायु, वन, खनिज इत्यादि के बिना कोई भी क्रिया-कलाप यथा कृषि, उद्योगधन्धे, व्यापार-वाणिज्य, परिवहन इत्यादि का विकास नहीं किया सकता है, चाहे यह स्थानीय स्तर पर हो या फिर प्रादेशिक अथवा राष्ट्रीय स्तर पर। उपर्युक्त तत्वों का उपयोग मनुष्य अपने रोटी, कपड़ा व मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ अन्य आवश्यकताओं को पूरित करता रहता है। वर्तमान में प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन सभी जगहों पर विद्यामान हैं, अन्तर केवल इतना ही है कि कुछ जगहों पर बड़े पैमाने पर कोयला, लोहा, ताँबा इत्यादि पाये जाते हैं, जबकि कुछ जगहों पर इससे इतर संसाधन यथा उपजाऊ मिट्टी, बालू-रेत व वनस्पतियाँ ही पायी जाती हैं।

अध्ययन क्षेत्र "फर्रूखाबाद जनपद, उ0 प्र0" जो आलू क्षेत्र के नाम से जाना जाता है, में भी विद्यामान स्थानीय संसाधनों का वितरण प्रतिरूप एवं पर्यावरणीय प्रभाव के लक्षण विविध रूपों में परिलक्षित हो रहे हैं। यह जनपद भौगोलिक रूप से गंगा एवं राम गंगा नदियों की गोंद में 26° 46' उत्तरी अक्षांश तथा 79° 07' पूर्वी देशान्तर, 2,28,830 हेक्टेअर क्षेत्र पर 18,87,577 (वर्ष 2011) जनसंख्या के साथ विस्तृत, पुष्पित तथा फल्वित है। यह जनपद 03 तहसीलों, 07 क्षेत्र पंचायतों, 511 ग्रम पंचायतों, 1010 गावों (Villages), 13 थानों, 02 नगरपालिकाओं, 04 नगर पंचायतों एवं 01 छावनी परिषद से आच्छादित है। जनपद का मुख्यालय फतेहगढ़ में स्थित है। जो अन्य महानगरों कानपुर-125 किमी0, लखनऊ-196 किमी0, बरेली-126 किमी0 की दूरी पर राष्ट्रीय मार्ग सं0-02 एवं 29 । से संलग्न है।

जनपद फर्रूखाबाद, गंगा के मैदानी व कक्षारी भाग तथा प्रमुख नदी गंगा जो सामान्यतः उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है तथा उसकी सहायक काली व राम गंगा नदियों के दोआब क्षेत्रों में, सामान्य ढाल एवं ऊबड़-खाबड़, लहरदार तथा भूड़ (Bhoor) युक्त, समुद्र तल से 167.64 मी0 की औसत ऊँचाई पर बलुई, बलुई-दोमट, जलोढ़ एवं भूरी मिट्टियाँ जो अधिकाधिक उपजाऊ हैं, के साथ फैला हुआ है। इस क्षेत्र की मिट्टियों का pH मान 6.5-7.5 है। यहाँ का औसत तापमान ग्रीष्म कालीन 27°ब तथा शीत कालीन 15°ब और औसत वार्षिक वर्षा 95.45 सेंमी0 है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रपत्र के उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप की व्याख्या करना।
2. स्थानीय संसाधनों के वितरण स्वरूपों का ऑकलन, अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
3. स्थानीय संसाधनों के आधार पर विकास का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का विवेचना एवं निराकरण करना।
4. विकास स्वरूपों का भूमि, जल एवं मृदा संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभावों का ऑकलन करना।
5. समस्याओं के निराकरण सम्बन्धी उपायों का ढूढ़ना।

विधितंत्र

1. क्षेत्र स्वसर्वेक्षण, आँकड़ों का संग्रहण इत्यादि।
2. पूछ-ताछ एवं अवबोधन।
3. विश्लेषण एवं निष्कर्षण।

विश्लेषण

जनपद फर्रूखाबाद उपजाऊ मिट्टी तथा बालू व रेत के लिए सम्पन्न संसाधन हैं। इसके अलावा यहाँ वनस्पतियाँ तथा पशुधन स्थानीय संसाधनों के रूप में विद्यमान हैं। यहाँ की भूमि का उपयोग विविध रूपों में किया जाता है। इस जनपद के भू-उपयोग एवं उनके वर्गीकरण निम्न तालिका में दर्शाए गये हैं। जिनमें कृषि के अन्तर्गत 64.67 प्रतिशत भूमि प्रयुक्त की जाती है। परन्तु यह आँकड़ें दिन प्रति दिन घटते व बढ़ते रहते हैं। वर्तमान समय में सरकारी, स्थानीय एवं व्यक्तिगत स्तर पर कृषित भूमि का विस्तार एवं विकास बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। यहाँ एक खेत में बहुफसलीय व चक्रण विधियों का प्रयोग करके फसलें उगाई जाती हैं। फसलों में भी बड़े पैमाने पर आलू की खेती की जाती है। इसीलिए इस जिले को "आलू वाला जनपद" कहा जाता है। इसे अलावा यहाँ कटरी क्षेत्र के अलावा अन्य सम भागों में तरबूज, खरबूज, ककड़ी व खीरे की खेती की जाती है। भूड़ भागों में सिंचाई की व्यवस्था करके तिलहन फसलें उगायी जाती हैं। जो कई उद्यमों को पोषित करते हैं। भूड़ भागों की मिट्टियों व रेतों को भराव के लिये प्रयोग किया जाता है। जिससे एक तरफ उच्च भूमि समतल हो जाती है, तो दूसरी तरफ उससे भराव व रोजगार की प्राप्ति हो जाती है। कटरी व उच्च भू-भागों में पतेल (सरकण्डा) पाया जाता है, जिसका उपयोग रस्सी व चटाई बनाने में प्रयुक्त किया जाता है। जिससे कुटीर उद्योग विकसित हो जाता है

जनपद फर्रूखाबाद का भूउपयोग वर्ष 2006-2007

कमांक	भूमि	क्षेत्रफल (हेक्टेअर में)	कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत
01	सम्पूर्ण भूमि	228830	100
02	वन क्षेत्र	1021	0.44
03	शुद्ध बोयी गयी भूमि	148000	64.67
04	परती भमि	28687	12.54
05	कृषि के लिए अनुपयुक्त भूमि	8097	3.54
06	विविध	43065	18.81

स्रोतः इंटरनेट

जनपद फर्रूखाबाद की प्रमुख फसलें

जनपद क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली प्रमुख खाद्यान्न फसलों में- मक्का, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जौ, दलहनी फसलों में-मूँग, उदड़, चना, अरहर, तिलहन (तेल-खाद्य/अखाद्य) सूरजमुखी, सरसो, तिल, अरण्डी, सब्जियों में- आलू, गुईया, बण्डा, कुम्बड़ (कद्दू) तथा इनके अलावा मौसमी सब्जियाँ पर्याप्त मात्रा में उगाई जाती हैं। गन्ना, तम्बाकू कायमगंज विकास खण्ड में प्रचुर मात्रा में पैदा किया जाता है। उक्त फसलों के साथ-साथ फलों के बागान बड़े पैमाने पर लगाये ;च्संदजमकद्ध गये हैं। साथ ही मौसमी फलों-खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, खीरा आदि की खेती होती है। प्रमुख फसलों एवं बागानों में प्रयुक्त की जाने वाली भूमि को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है। इसके अलावा अन्य फसलें भी उगाई जाती हैं।

जनपद फर्रूखाबाद की प्रमुख फसल एवं बागानों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन वर्ष 2006-2007

कमांक	फसलें	क्षेत्रफल (हेक्टेअर में)	उत्पादन (मीटरीटन में)
1	धान (चावल)	15032	125143.56
2	मक्का	43687	121654.36
3	ज्वार	2916	1784.84
4	बाजरा	43039	1485.65
5	गेहूँ	70870	258385.32
6	जौ	3171	784.43
7	मूँग	1325	3251.21
8	उदड़	821.63	1354.65
9	आलू	28980.65	8671.69
10	सरसो	85251.21	8671.52
11	आम	1885.56	3259.58
12	अमरूद	785.36	5674.46
13	पपीता	60.25	3269.46
14	तरबूज	82.31	3254.25

स्रोतः इंटनेट

उपर्युक्त भूउपयोग, फसलों एवं उनके उत्पादनों आदि के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि जनसंख्या के रोगार का मुख्य आधार कृषि है, जिसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन या गिरावट क्षेत्रीय/स्थानीय विकास को प्रभावित कर सकता है।

जनपद फर्रूखाबाद में कृषि एवं पशुपालन का विशेष महत्व है। यहाँ सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का लगभग 30-35 प्रतिशत का योगदान है जिसमें दुग्ध एक ऐसा उत्पाद है

जिसका योगदान सर्वाधिक है। छोटे, भूमिहीन तथा सीमान्त किसान/जनसंख्या जिनके पास फसल उगाने एवं बड़े पशु पालने के अवसर सीमित है, छोटे पशुओं जैसे भेड़-बकरियाँ, सूकर एवं मूर्गी पालन रोजी-रोटी के साथ-साथ आर्थिक विकास का एक प्रमुख साधन है। पशुओं से प्राप्त होने वाले उत्पादों में चमड़ा, ऊन, दुग्ध तथा दुग्ध उत्पादों में पनीर, खोया, मक्खन, दही-छाँछ इत्यादि हैं।

जनपद फर्रूखाबाद के प्रमुख उद्योग धन्धे एवं उद्यम

फर्रूखाबाद जनपद में मुख्यतः मिट्टी के बर्तन व मूर्ति बनाने, ईंट-भट्टे के अलावा यहाँ कृषि कार्य पर आधारित उद्योग धन्धे व उद्यम विद्यमान हैं। जिससे इनका जीवन यापन के साथ ही साथ सर्वांगीण विकास होता है। यहाँ के उद्योग धन्धों व उद्यमों में- 1. चीनी उद्योग, 2. तम्बाकू उद्योग, आलू भुजिया व नमकीन उद्योग, 3. फल पकाने का उद्यम, 4. इत्र व गुलाब जल का उद्योग, 5. फ्लोवर मिल, 6. आटा-चक्की मिल, 7. स्पेलर मिल, 8. लकड़ी व आरा मिल, 9. कुटिर उद्योग, 10. डेयरी उद्योग, 11. पनीर, खोया व मक्खन उद्योग, 12. मांस उद्योग, 13. मत्स्योद्योग, मूर्गी पालन उद्योग इत्यादि।

जनपद फर्रूखाद में विकास खण्डवार मूर्गीपालकों की सूची वर्ष 2017-18

क्रमांक	विकास खण्ड	मूर्गी पालकों की संख्या
1.	कायमगंज	23
2.	नबाबगंज	46
3.	शमशाबाद	30
4.	बढ़पुर	41
5.	राजेपुर	11
6.	मोहम्मदाबाद	19
7.	कमालगंज	30
	कुल	170

स्रोतः इण्टरनेट सेवा।

निष्कर्ष

इस प्रकार किसी क्षेत्र या प्रदेश के भीतर वहाँ के स्थानीय संसाधनों पर विविध प्रकार के उद्योग व उद्यम विकसित करके उनका अपना स्वयं का तथा स्थानीय व प्रादेशिक स्तर का विकास संभव है। भारत सरकार के साथ-साथ राज्य की सरकारें तथा स्थनीय निकायों/समूहों के द्वारा सुविधायें उपलब्ध कराकर स्थानीय संसाधनों का भरपर उपयोग व उपभोग किया जा रहा है। इसमें विभिन्न योजनायें संचालित की जा रही हैं। जिससे स्थानीय जनता उसमें सम्मिलित होकर विकास कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। इसमें नरेगा-मनरेगा, महिला सहायता समूह, पशु पालन, मछली पालन, स्वरोजगार योजना इत्यादि योजनायें संचालित हो रही हैं। जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिल जाता है। जनपद फर्रूखाबाद में इसी मिट्टी व रेत के माध्यम से कृषि कार्य के साथ-साथ उद्योग-धन्धे व उद्यम में अपनी भागीदारी करके आजीविका कें साथ-साथ जनपद का सर्वांगीण विकास में अपना योगदान कर रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. मोहम्मद हारून (2003): "आर्थिक भूगोल के मूल तत्व", वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।*
2. *नेगी, बी.एस.(1996): "संसाधन भूगोल", कल्याणी पब्लिशर, लुधियाना।*
3. *डॉ. चतुर्भुज मामोरिया (2012): "आर्थिक भूगोल", साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।*
4. *डॉ. जगदीश सिंह (2001): "संसाधन भूगोल", राधा पब्लिकेशन।*
5. *इण्टरनेट सेवा।*
6. *पाठक, गणेश कुमार (2001): "ग्रामीण विकास में पशुधन की भूमिका", कुरुक्षेत्र (नई दिल्ली), नवंबर पृष्ठ- 23.*